AVANI

अवनी

‘वार्षिक प्रतिवेदन’

2009 - 10

पोस्ट त्रिपुरादेवी वाया बेरीनाग, जनपद पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड, पिन–262531
टेलीफैक्स : 05964 244943
ई–मेल : info@avani-kumaon.org
वेबसाइट : www.avani-kumaon.org

विषय सूची

1. परिचय 3

2. अक्षय ऊर्जा तकनीकि का विकास एवं प्रचार–प्रसार 6
   - 2.1 सोलर फोटोवोल्टाईक
   - 2.2 सोलर थर्मल
   - 2.3 मैकेनिकल कार्यशाला
   - 2.4 पाईन नीडल गैसीफायर
   - 2.5 बायोगैस

3. नये डिजाईनों के विकास से परम्परागत हस्त–शिल्प का संरक्षण –हस्तनिर्मित प्राकृतिक रंग के रेशम ऊन के उत्पाद 12

4. महिला सशक्तीकरण 14
   - 4.1 स्वयं सहायता समूह
   - 4.2 बालिका शिक्षा

5. वर्षा के जल का संग्रहण एवं निष्प्रयोज्य जल का पुनः प्रयोग 18

6. प्राकृतिक कृषि 19

7. रेशम कीटपालन – वन्य रेशम ईरी एवं मूँगा की खेती 20
   - 7.1 प्रशिक्षण एवं परीक्षण कोकून पालन

8. स्वास्थ्य सुरक्षा 22
   - 8.1 स्वास्थ्य बीमा
   - 8.2 स्वास्थ्य शिविर
   - 8.3 दाई प्रशिक्षण
   - 8.4 बेसलाईन सर्वे
   - 8.5 प्रदर्शन भ्रमण

9. कार्यशालाऐं एवं बैठकें 23

10. विद्यार्थी एवं स्वयंसेवक 24

12. अन्य संस्थानों से सहयोग 24

13. हमारे वित्तीय सहयोगी 25

14. व्यक्तिगत दानदाता 2009–2010 25

15. अवनी मुख्य कार्यकारिणी सदस्यों की सूची 26

16. अवनी सामान्य कार्यकारिणी सदस्यों की सूची 26

15. केस स्टडी 28

16. वित्तीय सारांश 33

भूमिका

यह वर्ष अवनी द्वारा स्थापित हस्तशिल्प उद्यम के विकास एवं विस्तार का वर्ष रहा। अवनी द्वारा स्थापित इस उद्यम को अब कुमाऊॅ अर्थक्राफ्ट स्वायत्त सहकारिता द्वारा संचालित किया जा रहा है। वर्तमान में इस उद्यम का संपूर्ण उत्पादन एवं बिक्री का कार्य कुमाऊॅ अर्थक्राफ्ट स्वायत्त सहकारिता द्वारा किया जा रहा है। इस वर्ष इस उद्यम की बिक्री लगभग रू0 40,00,000 रही जोकि विश्वव्यापी मंदी के बावजूद पिछले वर्ष की तुलना में 25 प्रतिशत अधिक है। घरेलू स्तर पर बिक्री में 100 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है जबकि निर्यात व्यापार भी कुछ देशों में वितरकों के माध्यम से मजबूती की ओर बढ़ रहा है।

ग्राम चनकाना में फील्ड सेंटर हेतु विगत 2 वर्षों से निर्माणाधीन भवन का कार्य इस वर्ष पूर्ण हो गया है तथा इस सेंटर में कार्य आरंभ हो गया है। इस सेंटर का निर्माण वोल्कार्ट फाऊंडेशन के वित्तीय सहयोग से किया गया है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध निर्माण सामग्री द्वारा निर्मित इस केन्द्र से हम स्वयं को गौरान्वित महसूस कर रहे हैं। ग्रामीण जनता के बीच इस भवन के प्रति काफी उत्सुकता है।

सौर ऊर्जा उद्यम भी मजबूती से आगे बढ़ रहा है तथा इस वर्ष लगभग रू0 10,00,000 की बिक्री इस उद्यम द्वारा की गई है। यह हमारे लिये इस मायने में बढ़ी उपलब्धि है क्योंकि हम ऐसे परिवेश में कार्य कर रहे हैं जहॉ सरकारी अनुदान की स्थिति एकदम अस्पष्ट है। एलईडी आधारित सौर उपकरणों के विकास एवं गरीब परिवारों को विद्यमान सौर समितियों से ऋण उपलब्ध कराकर हम गरीब परिवारेां को मासिक रूप से उतनी धनराशि से सौर लाईट उपलब्ध कराने में सक्षम हुए हैं जितनी धनराशि वे मासिक रूप से कैरोसिन पर खर्च करते हैं। इस प्रक्रिया से एक बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि उन गरीब परिवारों को सौर ऊर्जा उपलब्ध हुई है जो यह मानते थे कि गरीबी के कारण उन्हें सौर ऊर्जा प्राप्त नहीं हो सकती। आगामी वर्षों में हम इस दिशा में और अधिक गंभीरता से कार्य करने की योजना बना रहे हैं। इस कार्यक्रम को अंतर्राष्ट्रीय डिजाईन विकास सम्मेलन में व्यवसाय योजना निर्माण हेतु चयनित किया गया है जिसके माध्यम से इस कार्यक्रम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने की संभावना है।

हम अपने उन समस्त मित्रों एवं शुभचिन्तकों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अवनी के कार्यो को आगे बढ़ाया तथा हमारे प्रयासों के फलीभूत करने हेतु अमूल्य सहयोग एवं अंशदान प्रदान किया।

अवनी के फील्ड सेंटरों के माध्यम से विभिन्न गॉवों में संचालित कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है।

क्रम सं0	गॉव का नाम	कताई बुनाई	सौर उपकरण स्थापना	रेशम की खेती	महिला समूह ऋण एवं बचत	महिला समूह के साथ आय उपार्जक	वर्मि कम्पोस्टिंग	बायो गैस	बालिका शिक्षा	चीड़ की पत्ती संग्रहण	वर्षा जल संग्रहण
धरमघर केन्द्र											
1	सिमगढ़ी	√	√		√	√	√		√		√
2	सौक्यूड़ा	√	√								√
3	धरमघर	√	√		√	√					√
4	महरौड़ी		√	√	√	√	√				√
5	लमजिंगड़ा		√		√	√	√				
6	कराला	√									
7	दसौली	√									
8	थुमा	√	√								
9	धुरा	√									
10	दराती	√									
11	बास्ती		√	√	√						
12	दुदिला				√						
13	एराड़ी				√						
14	मझेड़ा		√								
दिगोली केन्द्र											
1	मांणा	√	√	√	√	√	√		√		
2	दिगोली	√	√	√	√	√	√	√	√		√
3	धौलानी	√	√	√	√	√	√				
4	मटकोली	√	√	√	√	√	√				
5	कालीगाड़	√									
6	नायल	√									
7	डाना	√	√	√			√				
8	रैतोली			√							
9	देवल		√	√					√		
10	सिलिंगिया		√		√	√					
11	चन्तोला		√	√	√	√	√		√		√
12	औलानी	√	√		√	√			√		
13	सिमायल	√	√	√	√	√					√
14	ठांगा	√	√	√	√	√	√				
15	रावतसेरा		√								
16	भयूँ		√					√			
17	नरगोली			√							
18	देवलेत			√		√					
19	ढानण			√		√					
20	पैठॉड़					√					
21	धुरा					√					
22	तलाड़ा					√					
23	पाटाडुँगरी			√							
24	सानीउडियार			√							
25	दौला			√							
26	कन्यागाड			√							
27	लेटगाड़ी			√							
28	पानीगाड़			√							
29	भेटा			√							

क्रम सं0	गॉव का नाम	कताई बुनाई	सौर उपकरण स्थापना	रेशम की खेती	महिला समूह ऋण एवं बचत	महिला समूह के साथ आय उपार्जक	वर्मि कम्पोस्टिंग	बायो गैस	बालिका शिक्षा	भीड़ की पत्ती संग्रहण	वर्षाती जल संग्रहण
त्रिपुरादेवी केन्द्र											
1	त्रिपुरादेवी	√	√	√	√	√	√	√		√	√
2	भंडारीगॉव	√									
3	राईआगर	√									√
4	बना	√			√	√					
5	मनीपुर	√									
6	हस्यूड़ी	√			√					√	
7	बोराखेत	√		√							
8	मुँगराऊँ	√			√	√					
9	बेरीनाग	√			√						
10	सेरा पहर				√	√					
11	रावलगॉव				√	√	√				
12	सेला				√		√				
13	कन्यूरपानी				√						
14	ज्यूलागॉव				√		√				
15	पिपली				√						
16	जखेड़ी			√	√	√					
17	स्याल्वे			√							
18	वर्षायत			√							
19	हिपा		√	√							
20	ज्यूला			√	√				√		
21	सलॉड़		√								
22	गुरैना रजवार		√								
23	बहिलकोट		√	√							
24	सेरागढ़ा		√								
25	फालरौ खरचौड़		√								
26	राई			√							
27	ब्याती			√							
28	भिनगड़ी			√							
29	बल्टा				√				√		
30	सानीखेत			√							
31	मुसलगाड़			√							
32	नाली			√							
33	बैसाली			√							
34	कफाली			√							
35	झूनी	√									
36	गोबरगाड़ा	√	√								
37	पौंसा			√							
38	बुसैल		√								
चनकाना केन्द्र											
1	चनकाना										
2	मूनी	√		√	√	√	√				√
3	गोदा	√		√							
4	पुँगरखोली	√									
5	लिंगुरानी	√									
6	मझेड़ा			√							
7	सीना			√							
8	गढ़तिर			√							

9	भनेलगॉव	√							√		
10	पुरिंग	√									
11	पटोली			√							
12	बेलकोट			√							
13	पुरानाथल			√							
14	डांगीगॉव			√							
15	खेती जौली		√	√							
सुकना केन्द्र											
1	सुकना	√	√	√	√	√	√		√		√
2	घांगल	√	√					√			
3	बानड़ी	√	√								
4	राममंदिर	√									
5	धौलानी	√									
6	ग्वाल	√									
7	गोल्ती		√	√							
8	चाख			√	√						
9	ओखरानी				√						

वर्ष 2009–10 के दौरान संपादित कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है।

2. अक्षय ऊर्जा तकनीकि का विकास एवं प्रचार–प्रसार :–

2.1 रोशनी हेतु प्रयोग

अवनी संस्था कुमाऊॅ क्षेत्र के गॉवों में सौर ऊर्जा के प्रचार – प्रसार हेतु वर्ष 1997 से कार्यरत है। विगत 12 वर्षों में हमने 250 गॉवों एवं तोकों के 1991 परिवारों में सौर उपकरणों की स्थापना की है।

यह कार्यक्रम 24 ग्राम स्तरीय सौर ऊर्जा समितियों द्वारा संचालित है, जो कि वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर हैं तथा जिनके पास स्थापित सौर उपकरणों के रख–रखाव हेतु प्रशिक्षित तकनीशियनों की एक टीम है। इस वर्ष हमने ग्राम झूनी में एक नई सौर ऊर्जा समिति का गठन किया है। झूनी गॉव जनपद बागेश्वर के सदूरवर्ती उच्च हिमालयी क्षेत्र के सरयू घाटी में स्थित है। ग्रामीण स्तर पर स्थापित समितियां अन्य कार्यक्रमों हेतु भी धनराशि के स्थानांतरण एवं प्रबंधन हेतु सहजकर्ता की भूमिका निभा रही हैं। इस वर्ष सौर ऊर्जा समिति ठांगा द्वारा ग्राम मुसलगाड़ में ईरी कीटपालन गृह निर्माण हेतु धनराशि आबंटित की गई।

हम उन गरीब परिवारों को सौर उपकरण उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य का विस्तार कर रहे हैं जिन्हें सरकारी अनुदान का लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। सौर उपकरणों को कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु हमने एलईडी आधारित सौर उपकरणों के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया है। एल ई डी आधारित उपकरण सीएफएल की तुलना में कम ऊर्जा की खपत करते हैं तथा कम कीमत पर घरेलू रोशनी उपलब्ध कराने में सक्षम हैं।

सौर उपकरणों के प्रचार – प्रसार कार्यक्रम के तहत हम उन गरीब परिवारेां को गॉवों में विद्यमान सौर समितियों से *ऋण उपलब्ध करा रहे हैं जो अब भी रोशनी के लिये कैरोसीन लैंप पर निर्भर हैं। ग्राम भयूॅ, सिमगढ़ी* एवं महरौड़ी समितियों द्वारा जनपद बागेश्वर एवं जनपद पिथौरागढ़ के गॉवों क्रमशः भयूॅ, थुमा, बास्ती एवं मझेड़ा के ग्रामीणों को सौर उपकरणों की स्थापना हेतु आसान किस्तों

में ऋण उपलब्ध कराया है। इन समितियों द्वारा कुल मिलाकर रू0 72,000 की धनराशि सौर उपकरणों की स्थापना हेतु ऋण के रूप में उपलब्ध कराई गई है। अब यह परिवार कैरोसीन की कीमत पर आधुनिक रोशनी का प्रयोग करने में सक्षम हैं तथा 2 वर्ष से कम अवधि में उपकरण हेतु लिये गये ऋण वापसी में सक्षम होंगे। हमारा प्रयास है कि हम इस दिशा में और अधिक मेहनत करके ऐसी कार्ययोजना बनाऐं कि आगामी वर्षों में अधिकाधिक परिवार इस तकनीकि का लाभ प्राप्त कर सकें। उत्तराखंड राज्य के गरीब से गरीब परिवारेां तक इस तकनीकि का लाभ पहुॅचाने हेतु हम बैंको एवं अन्य वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्ति हेतु संपर्क कर रहे हैं। इस कार्ययोजना को अंतर्राष्ट्रीय डिजाईन विकास सम्मेलन द्वारा व्यवसाय कार्ययोजना निर्माण हेतु चयनित किया गया है जिसकी मेजबानी अमेरिका स्थित विश्वविद्यालय कोलोरोडो स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा की जा रही है।

इस वर्ष के दौरान हमने जनपद बागेश्वर के सदूरवर्ती उच्च हिमालयी क्षेत्र के गॉव झूनी में कार्य आरंभ किया है जोकि नजदीकि सड़क मार्ग से 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। माईक्रोहाईडिल द्वारा इस क्षेत्र में आपूर्ति की जा रही बिजली काफी अनियमित है तथा कई बार महिनों तक उपलब्ध नहीं होती। अवनी के मित्र एवं संगीतकार श्री चिनमया डनस्टर के माध्यम से हमारा परिचय झूनी गॉव से हुआ तथा उनके द्वारा ही व्यक्तिगत दानदाताओं एवं शुभचिन्तकों के सहयोग से वित्तीय मदद प्राप्त की गई। इसके अलावा संगीत समारोहों के माध्यम से भी वित्तीय संसाधन जुटाये गये। ग्राम झूनी के ही शारीरिक रूप से अक्षम एक नवयुवक को सौर तकनीशियन के रूप में प्रशिक्षित किया गया है जोकि प्रशिक्षण प्राप्ति के बाद आत्मविश्वास पूर्वक कार्य कर रहा है। वर्तमान में उसे इस तरह प्रशिक्षित किया जा रहा है कि निकट भविष्य में वह अन्य आय उपार्जक कार्यों के संचालन में भी सहयोग प्रदान कर सके। अब तक झूनी गॉव के 24 परिवारेां में एलईडी आधारित सौर उपकरणों की स्थापना की गई है जिसमें प्रत्येक के साथ 2 टयूबलाईट की रोशनी के साथ – साथ मोबाईल फोन चार्ज करने की सुविधा भी उपलब्ध है।

(अ) <u>प्रचार–प्रसार</u> :–

सौर उपकरणों के निर्माण एवं बिक्री उद्यम को सशक्त करने एवं इस उद्यम के विस्तार हेतु हमने सौर उपकरणों के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया आरंभ की है। इस क्रम में नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा मंत्रालय भारत सरकार के सौर ऊर्जा केन्द्र द्वारा घरेलू सौर बत्ती का प्रमाणीकरण किया जा चुका है। एलईडी आधारित घरेलू सौर बत्ती के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया जारी है।

- इस वर्ष के दौरान अवनी द्वारा कुल 164 सौर लालटेनें बेची गई जिसमें से 161 एलईडी लालटेनें शामिल हैं।
- रामकृष्ण शारदा मठ कसार देवी अल्मोड़ा में एक एलईडी आधारित स्ट्रीट लाईट की स्थापना की गई।
- ग्रामीण स्तर पर पूर्व में स्थापित सौर उपकरणों की 63 बैट्रियां बदली गई।
- सौर समितियों द्वारा ग्रामीण स्तर पर गरीब परिवारों को सौर उपकरणों की खरीद हेतु ऋण उपलब्ध करवाया गया। अब तक कुल मिलाकर 205 परिवारों को रू0 11,62,180 का ऋण उपलब्ध करवाया गया। इसमें से विगत 6 वर्षो में रू0 8,16,480 का ऋण वापस कर दिया गया है।
- वर्ष 2009 –10 में 23 परिवारेां को रू0 72,000 की धनराशि ऋण के रूप में प्रदान की गई। गरीब परिवारों को कैरोसीन की कीमत पर आधुनिक रोशनी उपलब्ध कराने हेतु इस प्रक्रिया को काफी वर्षों बाद पुनः आरंभ किया गया।

- सौर ऊर्जा चालित चर्खों एवं रोशनी उपकरणों की स्थापना हेतु रू0 74,700 की राशि तकनीकि कोष से ऋण के रूप में उपलब्ध कराई गई। रू0 41,797 की धनराशि अब तक वापस की जा चुकी है। इसमें से रू0 8,847 की राशि इस वर्ष में जमा की गई है।
- वर्ष 2010 तक 24 ग्रामीण समितियों द्वारा कुल रू0 33,78,014 की धनराशि रख–रखाव कोष में जमा की गई। इस धनराशि पर रू0 7,86,412 के ब्याज के साथ अब तक की कुल जमा धनराशि रू0 41.5 लाख है।
- ग्रामीण स्तर पर एकत्रित कोष से समितियों द्वारा पूर्व में स्थापित उपकरणों की 17 बैट्रियां बदली गयीं।
- विगत वर्ष समितियों द्वारा कुल रू0 51,070 की धनराशि तकनीशियनों के वेतन खाते में जमा की गयी ।
- अवनी की सौर कार्यशाला में नौ तकनीशियनों की टीम है। इनमें से चार महिला तकनीशियन हैं। इस वर्ष तकनीशियनों द्वारा कुल 131 फील्ड भ्रमण किये गये।

समितियों द्वारा एकत्रित कोष का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है–

ग्राम समिति का नाम	2009–10 में रखरखाव कोश में जमा धनराशि	31 मार्च 2010 तक जमा कुल धनराशि	वर्ष 2009–10 में दिया गया ऋण	31 मार्च 2010 तक दिया गया कुल ऋण	31 मार्च 2010 तक कुल ऋण वापसी	वर्ष 2009–10 में समितियों द्वारा सौर तकनीशियन के वेतन खाते में अंशदान
देवल–ए	0	94,424	0	11,980	7,700	0
देवल ब	0	6,270	0	0	0	0
सौक्यूड़ा	1,000	40,335	1,200	43,130	23,600	0
सिलिंगिया	450	1,21,818	3,800	1,05,630	42,150	0
मांणा	450	1,17,414	0	95,840	82,580	0
महरौड़ी	0	2,08,346	0	3,77,370	3,45,100	0
ठांगा	0	2,67,996	0	2,33,610	1,90,390	0
उडेरिया	0	71,315	0	0	0	0
रावतसेरा	700	86,438	0	5,990	4,500	0
भयूँ	0	1,73,838	30,000	30,000	3,000	0
चंतोला	0	1,47,826	0	47,920	27,540	0
सिमगढ़ी	3,520	1,66,650	30,000	1,55,790	44,800	0
उडियारी	0	50602	0	0	0	0
धरमघर	0	9,028	0	0	0	0
क्वेराली	0	8,206	7,000	7,000	0	0
सिमायल	0	1,77,948	0	47,920	45,120	0
झूनी	24,000	24,000	0	0	0	0
कुल	**30,120**	**17,72,454**	**72,000**	**11,62,180**	**8,16,480**	**0**

तालिका 2

ग्रामीण विद्युतीकरण	वर्ष 2009–10 में	मार्च 2010 तक जमा	वर्ष 2009–10 में

योजना के तहत लाभान्वित परिवार	रखरखाव कोष में जमा धनराशि	कुल धनराशि	समितियों द्वारा तकनीशियन वेतन खाते में अंशदान
बुसैल	3,990	3,01,890	2,160
गुरना रजवार	1,650	56,030	1,650
बहिलकोट	4,300	57,740	4,300
हिपा	7,300	2,87,650	7,300
गोल्ती	33,330	4,52,940	33,330
सेरागढ़ा	8,000	3,21,600	0
फालरौ खरचौड़	2,330	1,27,710	2,330
कुल	**60,900**	**16,05,560**	**51,070**

वर्ष 2009–10 के दौरान निर्मित उपकरणों एवं सौर कार्यशाला का विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3

बस्तु विवरण	निर्मित	बिक्री
लालटेन 12 वोल्ट	0	0
लालटेन 6 वोल्ट	95	164
कुल लालटेन	**95**	**164**
सी एफ एल लैंप	190	37
घरेलू सौर बत्ती		60
सोलर टार्च		10
बैट्री		63
सौर पैनल		4

लालटेन/लैंप बिक्री से आय	3,05,200
कंपोनेंट बिक्री एवं रिपेयर से आय	42,058
टार्च विक्री से आय	3,450
बैट्री बिक्री से आय	1,11,555
सोलर स्ट्रीट लाईट सैट बिक्री से आय	53,200
घरेलू सौर बत्ती बिक्री से आय	3,10,500
सोलर कुकर	2,500
सर्विस चार्ज	38,456
प्रशिक्षण से आय	72,000
कुल आय	**9,38,919**

(ब) क्षमता विकास :–

इस वर्ष कुल 7 युवकों को सौर तकनीशियन के रूप में प्रशिक्षित किया गया जिसमें से 4 प्रशिक्षणार्थी श्री अरविंदों आश्रम रामगढ़ से शमिल थे। इन सभी को सौर तकनीकि के साथ सोलर वाटर हीटर फैब्रिकेशन हेतु भी प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षणों का विवरण तालिका 4 में दिया गया है।

तालिका 4

गॉव/संस्थान का नाम	प्रशिक्षणार्थी संख्या	प्रशिक्षण विषय	प्रशिक्षण अवधि
ग्राम बल्टा	1	सौर तकनीकि	28–11–09 से 20–2–10
ग्राम झूनी	1	सौर तकनीकि	26–12–09 से 25–03–10
श्री अरविंदो आश्रम रामगढ़ से विद्यार्थी	4	सौर तकनीकि एवं सौर वाटर हीटर निर्माण	19–12–09 से 19–2–10
ग्राम झांकरा	1	सौर वाटर हीटर निर्माण	15–09–09 से 31–03–10

सौर कार्यशाला के स्टॉक का इन्वैंट्री में कंप्यूटराईजेशन का कार्य जारी है। इस हेतु एक कार्यकर्ता को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

तालिका 5

प्रशिक्षणार्थी का नाम	विषय	प्रशिक्षण अवधि	प्रशिक्षक
ममता जोशी	इन्वेंट्र कंप्यूटराईजेशन	1–1–10 से जारी	तेज नारायण, दिवान आर्या

2.2 सोलर थर्मल उपकरण :–

(अ) सोलर वाटर हीटर :–

सौर उपकरणों पर अनिश्चित अनुदान के कारण हम लोगों को इस तकनीकि की स्वकार्यता के प्रति उत्साहित नहीं कर पाये हैं। हम इस तकनीकि की स्वीकार्यता को बढ़ाने हेतु प्रयास जारी रखे हुए हैं। इस प्रक्रिया के तहत हम संस्थानों एवं गेस्ट हाऊसों को इस तकनीकि के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित कर रहे हैं लेकिन पूॅजी के स्रोतो तक पहुॅच न होने के कारण सोलर वाटर हीटिंग उपकरणों के प्रचार – प्रसार में बाधा आ रही है।

(ब) सोलर ड्रायर :–

सोलर ड्रायर तकनीकि अधिक मूल्यवान फसलों को सुखाने की उत्तम तकनीकि है। सोलर ड्रायर की क्रय क्षमता का अभाव इस तकनीकि के प्रसार में मुख्य बाधा है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध एवं सस्ते कच्चे माल का प्रयोग करते हुए इसे सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। हमने इस दिशा में कुछ प्रयास किये हैं लेकिन अभी तक पर्याप्त सफलता नहीं मिली है। हम तकनीकि संस्थानों के सहयोग से इस दिशा में कार्य जारी रखे हुए हैं।

2.3 मैकेनिकल कार्यशाला :–

विगत वर्ष मैकेनिकल कार्यशाला फैब्रिकेशन कार्य में व्यस्त रही। ग्राम चनकाना में निर्मित भवन का संपूर्ण फैब्रिकेशन कार्य मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा किया गया। त्रिपुरादेवी केन्द्र में निर्मित किये जा रहे कार्यकर्ता आवास का फैब्रिकेशन कार्य कार्यशाला द्वारा किया जा रहा है। विश्व के विभिन्न भागों से अवनी में आने वाले विजिटरों से हमें काफी महत्वपूर्ण सुझाव मिले। मासाचुसेटस तकनीकि संस्थान से मान्यताप्राप्त डिजाईन लैब के विद्यार्थियों द्वारा लगभग 12 दिन तक अवनी टीम के साथ समय व्यतीत करके सोलर ड्रायर के विकास एवं चारकोल निर्माण की दिशा में कार्य किया गया।

कार्यशाला में उत्पादन का विवरण तालिका 6 एवं 7 में दिया गया है।

तालिका 6

अन्य सामग्री	कुल सं0
छत की ट्रेस	10
खिड़की झाप	6
डोम की छत का फ्रेम	1
ग्रिल	6
खिड़की रिपेयर	8
रोशनदान	8
सोलर ड्रायर	1
टैंक कवर	2
बुखारी	2
कुल	**44**

इसके अलावा मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा रेलिंग, जाल बाऊड्री एवं अवनी आफिस में बुखारी तथा कार्यकर्ता आवास में निर्धूम चूल्हे की स्थापना की गई।

- अवनी कार्यकर्ता आवास हेतु 20 फीट रेलिंग का निर्माण किया गया।
- स्प्रे ड्रायर मशीन कार्यशाला हेतु 44 फीट की नैट फैंसिंग की गई।
- अवनी कार्यालय में 2 बुखारी स्थापित की गई।
- अवनी कार्यकर्ता आवास में 2 निर्धूम चूल्हे स्थापित किये गये।

टैक्सटाइल फिनिशिंग हेतु कलैन्ड्रिग मशीन एवं पिगमेंट निर्माण हेतु स्प्रे ड्रायर मशीन संचालन हेतु भी 216.45 घंटे की विद्युत आपूर्ति कार्यशाला द्वारा की गई तथा रू0 26,010 की आय अर्जित की गई । इसमें से रू0 22,580 की आय पाईन नीडल गैसीफायर द्वारा उत्पादित बिजली से की गई।

तालिका 7

मैकैनिकल कार्यशाला द्वारा अर्जित आय	
फैब्रिकेशन	48,000
सोलर ड्रायर बिक्री	0
सोलर वाटर हीटर की बिक्री एवं स्थापना	3,980
अन्य आय	1,280
कलैंड्रिंग से आय	26,010
सर्विस चार्ज	5,700
कुल	**84,970**

2.4 पाईन नीडल गैसीफायर (पिरूल से बिजली निर्माण) :–

चीड़ की पत्ती के गैसिफिकेशन से प्राप्त बिजली से हम वैल्डिंग कलैंडरिंग एवं स्प्रे ड्रायर मशीन को चलाने में आने वाले खर्च को कम करने में सफल हुए हैं। गैसीफायर से प्राप्त बिजली का प्रतिघंटा खर्च रू0 40 एवं डीजल जनरेटर का खर्च प्रतिघंटा रू0 82 है। विगत 3 वर्षों में डीजल की खपत में इसी अनुपात में कमी हुई है।

तालिका 8

वर्ष	डीजल जनरेटर		गैसीफायर	
	डीजल की खपत	कार्य अवधि	पिरूल की खपत	कार्य अवधि
2007–08	378 ली0	167.9 घंटे	700 किग्रा	78.17 घंटा

2008–09	280 ली0	129.08 घंटे	2370किग्रा	181.75 घंटा
2009–10	190 ली0	88 घंटे	4606 किग्रा	307 घंटा

जनपद अल्मोड़ा के दो गॉवों में पाईन नीडल गैसीफायर कार्य के विस्तार हेतु वित्तीय मदद प्राप्ति के लिये प्रयास जारी हैं। हमें उम्मीद है कि ग्रामीण स्तर पर वैकल्पिक रसोई गैस एवं आय उपार्जक कार्यक्रमें हेतु स्वच्छ ऊर्जा के प्रति दानदाता संस्थाओं की रूचि विकसित होने के बाद हम इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में सक्षम होंगे।

2.5 अन्य संस्थानों से सहयोग

अन्य संस्थानों से सहयोग बढ़ाने की दिशा में हम टवेंट यूनिवर्सिटी नीदरलैंड एवं सैंट गैलन यूनिवर्सिटी स्विटजरलैंड के साथ पूर्व में ही कार्यरत हैं। इसके अलावा कुछ नये संस्थानों जैसे, मासेचुसेटस इंस्टीटयूट ऑफ टैक्नॉलॉजी से संबद्व डी लैब एवं आईडीडीएस के साथ संपर्क स्थापित किया गया है। अवनी द्वारा माह जुलाई अगस्त 2009 में घाना में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय डिजाईन विकास सम्मेलन में सहभागिता की गई तथा विभिन्न तकनीकों के विकास की दिशा में कार्य किया गया। हमारे द्वारा किये गये 2 क्षेत्रों क्रमशः लघु स्तरीय प्लास्टिक रिसाईक्लिंग एवं साल्ट वाटर बैट्री की दिशा में और अधिक कार्य करने की आवश्यकता हैं। डी लैब विद्यार्थियें एवं फैकलिटी सदस्यों द्वारा अवनी टीम के साथ कम लागत सोलर ड्रायर एवं पाईन नीडल गैसीफायर से निकले राख से चारकोल निर्माण हेतु कार्य किया गया। इसके अलावा हम डी लैब के साथ एक ऐसे चूल्हे के विकास की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं जिसमें चीड़ की पत्ती का प्रयोग किया जा सकता है।

3. नये डिजाईनों के विकास से परम्परागत हस्तशिल्प का संरक्षण हस्तनिर्मित प्राकृतिक रंगों के उत्पाद :–

विगत नौ वर्षों से परंपरागत हस्तशिल्प को परंपरागत एवं नये कारीगरों हेतु जीवकोपार्जन के स्रोत के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य करने के बाद अब इस उद्यम पर कारीगरों के स्वामित्व की दिशा में ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस वर्ष उत्पादन एवं बिक्री से संबधित समस्त कार्य कुमाऊॅ अर्थक्राफ्ट स्वायत्त सहकारिता द्वारा संपादित किये जा रहे हैं। इस कार्यक्रम से लगभग 500 कारीगर जुड़े हैं जिसमें से 90 शेयरधारक हैं।

अर्थक्राफ्ट हेतु डिजाईन निर्माण, मार्केटिंग एवं कार्यकर्ताओं के क्षमता विकास हेतु अवनी द्वारा सहयोग जारी है। अर्थक्राफ्ट की वेबसाईट निर्माणाधीन है।

हस्तशिल्प एवं प्राकृतिक रंगाई प्रयोग हेतु क्राफ्टमार्क सर्टिफिकेशन 31 मार्च 2011 एवं सिल्कमार्क सर्टिफिकेशन का नवीनीकरण 2012 तक किया जा चुका है। राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान एवं राष्ट्रीय फैशन टैक्नलॉजी तथा अंतर्राष्ट्रीय डिजाईनरों द्वारा उत्पाद डिजाईन प्रक्रिया में निरंतर सहभागिता की जा रही है।

अर्थक्राफ्ट द्वारा अवनी से वित्तीय एवं अन्य मदद प्राप्ति के साथ स्थापित आधारभूत ढॉचे का प्रयोग उत्पादन एवं बिक्री हेतु किया जा रहा है।

इस उद्यम ने विगत वर्ष में उल्लेखनीय मजबूती प्राप्त की है। इस वर्ष हस्तशिल्प एवं अन्य उत्पादों की विक्री में लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है तथा घरेलू स्तर पर बिक्री में 100 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। निर्यात बाजार में हमारी बिक्री स्थिर अवस्था में है तथा कुछ देशों के संस्थानों द्वारा हमारे उत्पादें का वितरक बनने में रूचि प्रदर्शित की गई है। स्विटजरलैंड के एक समूह के साथ अवनी हिमालयन टैक्सटाईल के नाम से वितरण का कार्य आरंभ हो गया है तथा जेनेवा एवं बर्न शहर में प्रदर्शनियो के माध्यम से बिक्री आरंभ हो गई है। वर्तमान में फ्रांस के एक फेयर ट्रेड संस्थान वौयाजर सैंस बैगाज के साथ सहयोग डिस्ट्रिब्यूटरशिप विकास की दिशा में बढ़ रहा है। इस वित्तीय वर्ष में लगभग 40 लाख रू0 की विक्री की गई है।

विगत वर्ष के दौरान 47 गॉवों एवं तोकों के 303 कारीगरों एवं रंगाई सामग्री संग्रहणकर्ताओं द्वारा इस कार्यक्रम में सहभागिता की गई। इन लाभार्थियों में 93.39 प्रतिशत महिलाऐं हैं। कार्यक्रम में शामिल 47 गॉवों में से हम 20 गॉवों में सघन रूप से कार्य कर रहे हैं तथा अन्य 27 गॉवों में हम व्यक्तिगत रूप से कारीगरेां के साथ कार्य कर रहे हैं। इस कार्यक्रम से रू0 11,54,921 की आय ग्रामीणेां द्वारा अर्जित की गई है।

हमारे कार्यक्रम से अधिकांश रूप से बोरा कुथलिया समुदाय की परंपरागत महिला कारीगर लाभान्वित हुई हैं। हम अन्य समुदायों के गरीब एवं पिछड़े वर्ग को भी कताई एवं बुनाई की कला स्थानांतरित करने की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं ताकि रोजगार अवसरों के सृजन के साथ – साथ कला का भी प्रचार प्रसार किया हो सके।

ग्रामीण स्तर पर आजीविका के अधिकाधिक अवसरों के सृजन हेतु चार गॉवों के चार व्यक्तियों द्वारा ग्रामीण उत्पादक केन्द्रों की स्थापना हेतु अवनी को जमीन दान दी है। इनमें से 3 गॉवों में 3 ग्रामीण उत्पादन केन्द्रों की स्थापना हेतु भवन निर्माण कार्य कुछ वर्ष पूर्व पूर्ण किया जा चुका है। ग्राम चनकाना में भवन निर्माण का कार्य इस वर्ष पूर्ण कर लिया गया है। इस भवन के निर्माण में अधिकांश रूप से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री जैसे मिट्टी एवं लकड़ी का प्रयोग किया गया है तथा ग्रामीण जनता इससे काफी उत्साहित है। इस भवन के निर्माण से ग्राम चनकाना एवं गढ़तिर में संचालित कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। इस केन्द्र के दोनों गॉवों के मध्य में होने से दोनों केन्द्रो को एक जगह समाहित किया गया है।

हस्तशिल्प कार्यक्रम के साथ संलग्न गॉवों का विवरण तालिका 9 में दिया गया है।

तालिका 9

केन्द्र का नाम एवं संबंधित गॉव						
क्र0 सं0	**धरमघर जिला बागेश्वर**	**दिगोली जिला बागेश्वर**	**त्रिपुरादेवी जिला पिथौरागढ़**	**चनकाना जिला पिथौरागढ़**	**सुकना जिला पिथौरागढ़**	**गढ़तिर जिला पिथौरागढ़**
1	सिमगढ़ी	मांणा	महरौड़ी	चनकाना	सुकना	गढ़तिर
2	सौक्यूड़ा	दिगोली	भंडारी गॉव	मूनी	घॉगल	भनेलगॉव
3	धूरा	धौलानी	राईआगर	गोदा	धौलानी	पुरिंग
4	धरमघर	मटकोली	बना	पुॅगरखोली	राममंदिर	पटोली
5	थुमा	नायल	त्रिपुरादेवी	लिंगुरानी	–	–

6	कराला	ठॉगा	मुॅगराऊॅ	–	–	–
7	दसौली	औलानी	मानीपुर	–	–	–
8	दराती, मुनस्यारी	सिमायल	हस्यूड़ी	–	–	–
9		कालीगाढ़	बोराखेत	–	–	–
10		ढानण	बेरीनाग	–	–	–
11		पैठॉड़	पभ्या			
12		धुरा				
13		तलाड़ा				
14		करड़ियागॉव				
15		नरगोली				

परंपरागत ऊनी कतकरेां को रेशम कताई हेतु प्रशिक्षित करने की दिशा में हमारा कार्य जारी है। स्थानीय किसानों के साथ रेशम की खेती का कार्य भी मजबूती से आगे बढ़ रहा है। विभिन्न गॉवों के 62 लाभार्थियों को सौर चालित चर्खे की स्थापना हेतु चयनित किया गया है। इन चर्खों की स्थापना हेतु 90 प्रतिशत धनराशि अनुदान के रूप में उरेडा द्वारा वहन की जायेगी तथा 10 प्रतिशत धनराशि लाभार्थी द्वारा अंशदान के रूप में वहन की जा रही है। अवनी द्वारा चर्खे पर कताई हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया जायेगा एवं देखभाल की जायेगी ताकि कतकर उत्तम गुणवत्ता के तागे का उत्पादन करके आय उपार्जित कर सकें। इसके माध्यम से स्थानीय किसानों द्वारा उत्पादित कच्चे माल का प्रसंस्करण स्थानीय स्तर पर हो सकेगा तथा अन्य लोग भी रेशम की खेती हेतु प्रेरित होंगे। उरेडा के साथ इस संबध में एम ओ यू पर समहति व्यक्त की गई है।

हस्तशिल्प उत्पादों की रंगाई हेतु प्राकृतिक रंगों का प्रयोग निरंतर सफलता के साथ आगे बढ़ रहा है। इस वर्ष दो प्राकृतिक रंगो इंडिगो एवं यूपिटोरियम की टैस्टिंग कपड़ा मंत्रालय की मुंबई स्थित वस्त्र समिति द्वारा की गई तथा इनको पैंटाक्लोराफिनोल एवं एमिनिज मुक्त का प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

हमने पौधों पर आधारित प्राकृतिक रंगों की एक श्रृंखला का उत्पादन जारी रखा है जो कि गैर रासायनिक एवं बच्चों के प्रयोग हेतु पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। इन रंगों के निर्माण में हल्दी, हरड़ा, दाड़िम छिलका एवं अखरोट के छिलके का प्रयोग किया जा रहा है। इन सभी का उत्पादन एवं संग्रहण महिला समूहों द्वारा किया जा रहा है। इस प्रकार यह ग्रामीण स्तर पर आय उपार्जन का भी माध्यम बन रहा है।

इनकी पैकेजिंग का कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा प्रदर्शनियों के माध्यम से इनकी बिक्री जारी है। प्राकृतिक रंगों को बिक्री करने हेतु इसमें और अधिक विकास की आवश्यकता है।

4. महिला सशक्तीकरण :–

4.1 स्वयं सहायता समूह

4.1.1 लघु बचत

अवनी द्वारा अब तक कुल मिलाकर 39 महिला स्वयंसहायता समूहों का गठन किया गया है।

सभी समूहों द्वारा नियमित बचत की जा रही है तथा सदस्यों के बीच ऋण का बॅटवारा किया जा रहा है।

महिला समूहों की बचत एवं ऋण का विवरण तालिका 20 एवं 21 में दिया गया है।

तालिका 10

क्रम सं0	समूह का नाम	सदस्य सं.	आयोजित बैठक	अपस्थित सदस्य	31 मार्च 2009 तक जमा	वर्ष 2009–10 में जमा	वर्ष 2009–10 में सदस्यों को वापस	कुल जमा	विगत वर्ष दिया गया ऋण	वर्ष 08–09 में दिया गया ऋण	वापस ऋण
1	लमजिंगड़ा	16	12	195	40,540	7,471	0	48,011	8,000	2,500	20,500
2	चन्तोला	10	6	55	16,542	8,754	6,021	19,275	4,000	0	0
3	सिमायल	16	8	120	17,204	3,233	0	20,437	0	0	0
4	माणा	12	7	57	40,117	4,357	0	44,474	0	10,000	8,000
5	धौलानी	17	8	103	21,452	4,550	0	26,002	7,000	15,000	0
6	महरौड़ी	14	8	99	18,117	5,038	0	23,155	1,0000	8,000	0
7	सिमगढ़ी	11	12	91	13,899	4,255	0	18,154	2,000	2,000	0
8	त्रिपुरादेवी	13	10	80	30,231	6,847	3,666	33,412	11,000	12,000	0
9	दिगोली	17	9	123	25,451	5,336	4,415	26,372	25,000	25,000	15,000
10	मटकोली	9	9	72	7903	1,530	1,000	8,433	0	0	0
11	धरमघर	6	12	105	7102	2,163	2,078	7,187	4,000	0	0
12	बेरीनाग	23	9	125	39,691	18,452	0	58,143	0	0	0
13	चनकाना	9	11	68	11,084	3,952	1,426	13,610	0	0	0
14	ठॉगा	11	7	62	30,120	2,864	0	32,984	0	24,000	0
15	सुकना	10	10	84	24,183	3,809	0	27,992	0	0	0
16	सिलिंगियॉ	15	7	71	9,891	4,009	0	13,900	5,500	0	0
17	गढ़तिर	9	3	13	3,140	0	0	3,140	0	0	0
18	मॅूगराऊॅ	22	10	89	12,460	4,274	0	16,734	0	13,000	0
19	हस्यूड़ी	8	7	47	5,038	1,915	0	6,953	1,000	0	0
20	रावलगॉव	16	10	127	11,558	4,250	0	15,808	0	0	0
21	बना बैंड	17	0	0	5,906	0	5,906	0	0	0	0
22	सेरा पहर	9	8	45	5,853	2,039	714	7,178	0	6,000	0
23	बना	12	8	81	7,299	3,431	0	10,730	0	0	0
24	सेला	14	11	81	9,161	3,915	0	13,076	0	0	0
25	कन्यूरपानी	10	10	75	6,161	2,571	0	8,732	0	0	0
26	ज्यूला	15	6	32	9,083	3,712	0	12,795	0	0	0
27	बानड़ी	8	9	95	3,845	1,573	0	5,418	0	0	0

28	औलानी	12	8	103	11,700	3,315	0	15,015	0	10,000	4,000
29	पिपली	15	10	95	8,197	3,113	1,540	9,770	0	0	0
30	ज्योति समूह बल्टा	11	0	0	2,663	0	0	2,663	0	0	0
31	प्रगतिशील समूह बल्टा	11	0	0	1,624	0	0	1,624	0	0	0
32	चाख	14	9	91	5,558	3,437	50	8,945	2,200	4,000	9,00
33	बास्ती	9	11	75	7,384	5,389	0	12,773	0	0	0
34	दुदिला	23	12	193	7,370	7,294	0	14,664	0	0	0
35	ओखराड़ी	12	9	84	3,793	2,453	160	6,086	0	0	0
36	एराड़ी	17	6	63	4,621	1,527	0	6,148	0	0	0
37	जखेड़ी	12	9	89	3,536	2,896	0	6,432	0	0	0
38	दिगोली	20	10	160	22,000	29,464	0	51,464	12,000	22,000	6,000
39	चेतना त्रिपुरादेवी	23	1	20	0	28,300	2,910	25,390	**0**	22,000	10,500
	कुल	**528**	**312**	**3,168**	**5,11,477**	**2,01,488**	**29,886**	**6,83,079**	**91,700**	**1,75,500**	**64,009**

तालिका 11

	2007–2008	**2008–09**	**2009–10**
कुल समूह	37	38	39
कुल सदस्य	499	511	528
कुल आयोजित बैठकें	339	358	312
उपस्थित महिलाऐं	3,358	3,370	3,168
वर्ष में कुल जमा	Rs 1,16,517	Rs 1,62,472	2,01,488
समूहों की कुल बचत	Rs 3,56,707	Rs 5,11,477	6,83,079
दिया गया ऋण	Rs 61,000	Rs 91,700	1,75,500
ऋण वापसी	Rs 46,360	Rs 80,200	64,900
पिछले 3 वर्षों में दिया गया कुल ऋण	Rs 1,95,770	Rs 2,41,200	3,28,200

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ऋण प्राप्त की अपेक्षा ऋण वापसी की दर काफी धीमी है। इस संदर्भ में महिला समूहों के साथ कैशफ्लो एवं ऋण से संबधित अन्य लागतों के विषय में प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि अधिकाधिक सदस्यों को ऋण सुविधा का लाभ प्राप्त हो सके।

4.1.2 महिला समूहों के साथ आय उपार्जक कार्यक्रम

हस्तशिल्प उत्पादों की रंगाई हेतु पौधों पर आधारित प्राकृतिक रंगों के प्रयोग से महिला समूहों हेतु उस सामग्री के प्रयोग से आय उपार्जन के स्रोत विकसित हुए हैं जिनका पूर्व में काफी कम प्रयोग किया जाता था।

इस प्रक्रिया से ओर तो महत्वपूर्ण प्रजातियों जैसे, रीठा, हरड़ा, दाड़िम मंजिष्ठ आदि के पौधों के संरक्षण को बढ़ावा मिल रहा है वहीं दूसरी ओर बसुंटी जैसे खरपतवार के उन्मूलन में सहायता मिल रही है।

रंगाई सामग्री के संग्रहण में लगतार दूसरे वर्ष ग्रामीणों की सहभागिता में वृद्धि हुई है।

महिला समूहों द्वारा रंगाई सामग्री के संग्रहण एवं प्रसंस्करण से रू0 77,765 की आय उपार्जित की गई। इस संभावना के आधार पर हम रंगाई सामग्री की खेती एवं पौधारोपण तथा पिगमेंट निर्माण की दिशा में कार्य विस्तार कर रहे हैं।

एकत्रित रंगाई सामग्री से पिगमेंट निर्माण हेतु इस वर्ष एक स्प्रे ड्रायर मशीन की स्थापना की गई है। इस मशीन की सहायता रंगाई से पिगमेंट निर्माण, बिक्री की व्यवस्था की जा रही है जिसका प्रयोग रंगाई एवं प्राकृतिक पेंटिंग रंग हेतु किया जा रहा है। स्प्रे ड्रायर मशीन की स्थापना से इस बात की संभावना विकसित हुई है कि इसकी सहायता से पिगमेंट निर्माण उस सीजन में किया जा सकता है जब रंग की मात्रा अधिकतम होती है तथा पिगमेंट का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। इस प्रक्रिया से कम भंडारण क्षमता का प्रयोग करते हुए कार्यक्षमता के विस्तार एवं विश्वसनीय आपूर्ति की संभावना के द्वारा खुले हैं। इस वर्ष विभिन्न पौधों से 1.876 किग्रा पिगमेंट का निर्माण किया गया। विभिन्न पौधों से प्राप्त पिगमेंट का विवरण तालिका 12 में दिया गया है।

तालिका 12

विवरण	प्राप्त रंग	प्रयोग की गई सामग्री किग्रा	प्राप्त पिगमेंट किग्रा	प्रतिकिग्रा प्राप्ति किग्रा
दाड़िम छिलका	पीला एवं भूरा	3.000	0.365	0.121
गेंदा फूल	पीला	1.000	0.084	0.84
अखरोट गाल	भूरा	6.000	0.710	0.118
दाड़िम छिलका एवं अखरोट गाल	भूरा	1.000	0.167	0.167
हरड़ा	काला	10.000	0.400	0.040
बसुंटी	हरा	10.700	0.150	0.014

विभिन्न रंगाई पौधों एवं प्रसंस्करण प्रक्रिया अलग – अलग होने से रंगाई पौधों से अधिकतम पिगमेंट प्राप्ति हेतु इनके मानकीकरण की प्रक्रिया जारी है।

आय उपार्जन हेतु महिला समूहों के साथ विभिन्न कृषि आधारित कार्यक्रमों को बढ़ावा देने की कोशिश के बाद महिला समूहों द्वारा रंगाई सामग्री की खेती एवं संग्रहण हेतु ज्यादा रूचि एवं

उत्साह प्रदर्शित किया गया है। हस्तशिल्प उद्यम के तैयार बाजार को देखते हुए भी इसके प्रति ज्यादा उत्साह है। इस प्रक्रिया से जहॉ एक ओर पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण पौधों का संरक्षण एवं पौधारोपण को बढ़ावा मिल रहा है वहीं दूसरी ओर काफी मात्रा में उग रही खरपतवार के उन्मूलन में भी सहायता मिल रही है। दोनों में पिगमेंट की काफी मात्रा विद्यमान है। विद्यमान उद्यम के साथ इसके पर्यावरणीय फायदों की प्राप्ति हेतु हम रंगाई पौधों की खेती, संग्रहण एवं प्रसंस्करण पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं ताकि महिला समूहों हेतु संरक्षण आधारित आय उपार्जन के स्रोत विकसित किये जा सकें।

इस बात को ध्यान में रखते हुए हम जंगलों में उगने वाले कुछ रंगाई पौधों की खोज एवं उनकी संभावित खेती की दिशा में कार्य कर रहे है। इस संदर्भ में अवनी टीम के सदस्यों द्वारा मुनस्यारी के नजदीक अत्यधिक ऊचॉई स्थित जंगलों का भ्रमण किया गया। इस भ्रमण में माटी संस्था से सहयोग एवं सहायता प्राप्त की गई जो कि वनीकरण, महिलाओं से संबधित मुददों एवं ईकोटयूरिज्म के क्षेत्र में कार्यरत है।

इस भ्रमण से मंजिष्ठ एवं वन मडुवा {एक जंगली पौध, जिसकी जड़ का प्रयोग रंगाई हेतु किया जाता है} को एकत्रित किया गया तथा अवनी केन्द्र स्थित नर्सरी में रोपित किया गया। इन दोनों पौधों का रोपण सफल रहा है तथा अब हम इनसे बीज प्राप्ति हेतु इंतजार कर रहे हैं ताकि ग्रामीण स्तर पर रोपण हेतु नर्सरी का निर्माण किया जा सके। धरमघर क्षेत्र से भी मंजिष्ठ बीज एकत्रित करके उसकी नर्सरी तैयार की जा रही है।

स्ट्राबोलैंथिस इंडिगो की एक प्रजाति के पौधे भी मुनस्यारी से प्राप्त किये गये लेकिन इससे इंडिगो रंग प्राप्त नहीं हुआ। इंडिगोफेरा टिक्टोरिया के भी कुछ बीज एकत्रित करके इस वर्ष 200 पौधों की नर्सरी तैयार की गई।

इसके अलावा 5000 रीठा पौध एवं 5000 हरड़ा पौध की नर्सरी तैयार करने हेतु गॉवों से बीज एकत्रित कर लिया गया है। ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के लिये आय उपार्जन के स्रोत उपलब्ध करने हेतु इस वर्ष नर्सरी का निर्माण किया जायेगा। हरड़ा, दाड़िम, अखरोट एवं रीठा के पौध एकत्रित करके उनके रोपण की भी कार्ययोजना तैयार की गई है।

4.2 बालिका शिक्षा :–

अवनी के मित्रों एवं व्यक्तिगत दानदाताओं के सहयोग से अनौपचारिक शिक्षा सहायता कार्यक्रम विगत कुछ वर्षों से संचालित किया जा रहा है। वर्तमान में 11 गॉवों के 15 बालिकाओं को उनकी पढ़ाई जारी रखने हेतु सहायता प्रदान की जा रही है। जनपद अल्मोड़ा के बल्टा गॉव में ज्योति शिक्षा समिति द्वारा संचालित प्राथमिक पाठशाला को भी इस धनराशि से सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम की सहायता से छोटी लड़कियों को अपनी स्कूली शिक्षा जारी रखने में सहायता प्राप्त हुई है तथा कुछ लड़कियों ने स्कूली पढ़ाई के बाद रोजगारपरक प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अधिकांश मामलों में इस सहायता से बचपन में शादी करने की प्रवृत्ति पर रोक लगी है।

5.वर्षा जल संग्रहण एवं निष्प्रयोज्य जल का पुनः प्रयोग :–

हमने अवनी केन्द्रों में वर्षा जल संग्रहण टैंकों के निर्माण का कार्य जारी रखा है। इस वर्ष ग्राम चनकाना स्थित फील्ड सेंटर एवं त्रिपुरादेवी केन्द्र में 2 वर्षा जल संग्रहण टैंको का निर्माण किया गया। दिगोली, सुकना एवं धरमघर केन्द्र अपनी पानी की आवश्यकताओं की अधिकांश पूर्ति वर्षा के जल से कर रहे हैं। ग्रामीण स्तर पर समस्त फील्ड सेंटरों की जल संग्रहण क्षमता लगभग 1,00,000 ली0 है जिसका प्रयोग वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कर रहे हैं। यद्यपि इस वर्ष बारिश काफी कम हुई एवं पानी की खपत बढ़ी है फिर भी हम त्रिपुरादेवी केन्द्र में निर्मित वर्षा जल संग्रहण टैंकों में एकत्रित जल पर वर्ष भर 5 माह तक निर्भर रहे। इस दौरान हम खाना पकाने, प्राकृतिक रंगाई, हस्तशिल्प हेतु ऊन, तागे एवं कपड़े की धुलाई एवं 35 कार्यकर्ताओं की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति वर्षा के जल से कर पा रहे हैं। वर्ष में बाकी समय के लिये हम अभी 5 किलोमीटर दूर से ट्रक से पानी ला रहे हैं।

अवनी केन्द्र में स्थापित स्लोसैंड फिल्टर से अवनी स्टाफ एवं अवनी केन्द्र में आने वाले विभिन्न देशों के लोगों के लिये साफ पानी उपलब्ध हो रहा है।

तालिका 13

अवनी परिसर में वर्षाती जल संग्रहण	मात्रा 2007–2008	मात्रा 2008–09	मात्रा 2009–10
टैंकों की कुल सं0	4	4	4
कुल संग्रहण क्षमता	3,25,000 ली0	3,25,000 ली0	3,25,000 ली0
मानसून के दौरान कुल संग्रहीत जल	12,00,000 ली0	9,35,000 ली0	8,40,000 ली0
पानी की दैनिक खपत	5,000 ली0	5,000 ली0	6,000 ली0
कुल दिन जब बर्षाती पानी का प्रयोग किया गया	240 दिन	187 दिन	140 दिन
5 किलोमीटर दूर से ट्रक से पानी न लाने की एवज में बचत	रू0 60,000	रू0 56,100	रू0 42,000

निरंतर कम होती जा रही बारिश के कारण हम इस वर्ष कम दिनों तक वर्षा के पानी का प्रयोग कर पाये। हमें उम्मीद है कि वर्ष 2010 में बेहतर मानसून से हम ट्रक से लाने वाले पानी पर अपनी निर्भरता कम कर पायेंगे।

• निष्प्रयोज्य जल संशोधन :–

त्रिपुरादेवी केन्द्र में स्थापित निष्प्रयोज्य जल संशोधन संयत्र विगत 2 वर्ष से कार्यरत है। इस संयत्र की सहायता से लगभग 3000 ली0 पानी दैनिक रूप से संशोधित किया जा रहा है। इस संशोधित पानी का सिंचाई हेतु प्रयोग करने से हम इस वर्ष अपने फार्म में और अधिक सब्जी उत्पादन में सफल हुए हैं। यह संयत्र अन्य संस्थाओं एवं सरकारी विभागों के लिये एक अच्छा प्रदर्शन केन्द्र भी साबित हो रहा है। इस तकनीकि के प्रयोग से सब्जी उत्पादन के रूप में आय उपार्जक कार्यक्रम के संभावनाओं के द्वारा खुले हैं।

6. प्राकृतिक कृषि :–

प्राकृतिक कृषि की विभिन्न पद्धतियों को प्रदर्शित करने हेतु अवनी केन्द्र के फार्म में बायोगैस स्लरी, वार्मिकम्पोस्ट, नाडेप एवं मिट्टी को पुनर्जीवित करने की समस्त तकनीकि का प्रयोग किया जा रहा है। इस फार्म में सामुदायिक भोजनालय के लिये सब्जी उत्पादन हेतु सिंचाई के लिये संशोधित जल का प्रयोग किया जा रहा है। वर्ष के दौरान इस फार्म का विवरण निम्नलिखित प्रकार है।

- त्रिपुरादेवी केन्द्र स्थित फार्म में 4 वर्मिकम्पोस्ट पिटों का निर्माण किया गया जिनके माध्यम से 1,500 किग्रा खाद का उत्पादन किया गया। इसके अलावा 3000 किग्रा खाद नाडेप पिट से प्राप्त की गई।
- त्रिपुरादेवी स्थित फार्म में एक ड्रिप ईरीगेशन सिस्टम की भी स्थापना की गई।
- खेत की मेंड़ों पर लैमन घास रोपित की गई।

उपरोक्त तकनीकों के प्रयोग एवं अवनी केन्द्र में निवास करने वाले कार्यकर्ताओं के दैनिक रूप से 1 घंटे के श्रमदान की सहायता से फार्म के उत्पादन में वृद्धि हुई है। इस वर्ष फार्म की आय रू0 42,536 हुई जोकि विगत वर्ष की तुलना में 70 प्रतिशत से भी अधिक है। अवनी फार्म इस क्षेत्र के किसानों के लिये उपयुक्त तकनीकों के प्रयोग के प्रदर्शन केन्द्र एवं प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में स्थापित हो रहा है।

7. रेशम की खेती

वन्य रेशम ईरी एवं मूंगा की खेती :–

हमने ईरी, मूँगा एवं ओकटसर रेशम की खेती हेतु नये किसानों केा जोड़ने का कार्य जारी रखा है। इस वर्ष 8 नये गॉवों में ईरी एवं मूँगा की खेती का कार्य आरंभ किया गया। उन पुराने गॉवों में भी कुछ नये किसानों को इस कार्य में जोड़ा गया जहॉ पूर्व के वर्षो में कार्य आरंभ किया जा जुका है।

ग्राम बास्ती में ओकटसर की खेती का कार्य इस वर्ष सरकारी एजेंसी के असहयोगात्मक रवैये के कारण जारी नहीं रह पाया। हम स्वयंसहायता समूह के माध्यम से इस कार्य को जारी रखने हेतु प्रयासरत हैं।

इस वर्ष के दौरान 18 गॉवों के 58 किसानों द्वारा 2.84 एकड़ भूमि में मूँगा भोज्य पौध (लिटसिया पौलिऐंथा एवं मिखैलिस बौंबासिना) तथा 23 एकड़ में ईरी भोज्य पौध (कैस्टर) का रोपण किया गया। किसानों द्वारा गॉवों में स्थापित नर्सरी से 6,000 पौध वर्ष 2009–10 के पौधारोपण हेतु उपलब्ध कराये गये।
ग्राम चनकाना के 8 किसानों द्वारा 9 नर्सरियों की स्थापना की गई तथा एक नर्सरी की स्थापना अवनी केन्द्र में की गई। इन नर्सरियों से वर्ष 2010–11 के पौधारोपण हेतु लगभग 6,000 पौध प्राप्त होने की संभावना है।
इस वर्ष के दौरान कुल 4 ईरी कीटपालन गृहों का निर्माण किया गया। अब तक कुल मिलाकर 31 ईरी कीटपालन गृहों का निर्माण किया जा चुका है।

कार्यक्रम से जुड़े नये गॉवों एवं किसानों का विवरण तालिका 27 में दिया गया है।

तालिका 14

गॉव का नाम	किसानों की सं0		रोपित क्षेत्र		कुल किसान	कुल क्षेत्र
	ईरी	मूँगा	ईरी	मूँगा		
सीना	1	0	0.5	0	1	0.5
खेती जौली	4	0	2	0	4	2
भूनी	1	0	0.5	0	1	0.5
माणा	3	0	1.5	0	3	1.5
भेटा	3	0	1.5	0	3	1.5
धौलानी	3	0	1.5	0	3	1.5
पौंसा	1	0	0.5	0	1	0.5
बहिलकोट	3	0	1.5	0	3	1.5
कुल	**19**	**0**	**9.5**	**0**	**19**	**9.5**

पुराने गॉवों में जोड़े गये नये किसानों का विवरण
तालिका 15

गॉव का नाम	किसानों की सं0		रोपित क्षेत्र		कुल किसान	कुल क्षेत्र
	ईरी	मूँगा	ईरी	मूँगा		
वर्षायत	7	0	3.6	0	7	3.5
लिंगुरानी	5	1	2.5	0.11	6	2.61
मझेड़ा	4	1	2	0.22	5	2.22
डाना	6	1	3	0.07	7	3.07
सिमायत	1	1	0.5	0.56	2	1.06
देवलेत	2	2	1	1	4	2
चंतोला	2	0	1	0	2	1
चाख	0	2	0	0.22	2	0.22
ओखराड़ी	0	1	0	0.22	1	0.22
सुकना	0	3	0	0.44	3	0.44
कुल	**27**	**12**	**13.6**	**2.84**	**39**	**16.34**

7.1 प्रशिक्षण एवं कोकून पालन :–

इस वर्ष के दौरान 10 गॉवों के 35 किसानों के साथ ईरी कीटपालन किया गया। 11 गॉवों के 32 किसानों द्वारा 2000 डीएफल ईरी कीटांड तथा 1 गॉव के 3 किसानों द्वारा 100 डीएफएल मूँगा कीटांडों का पालन किया गया। इस वर्ष के दौरान भी समय से उपयुक्त मौसम में कीटांड प्राप्त करने हेतु हमें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। सरकारी प्रयोगशाला द्वारा खराब गुणवत्ता के कीटांड उपलब्ध कराने के कारण फसल काफी न्यून रही परिणामस्वरूप किसान हतोत्साहित हुए। रेशम विभाग से इस मुददे पर बातचीत की गई तथा उनके द्वारा इस संदर्भ में आश्वस्त किया गया कि आगामी वर्षों में उत्तम गुणवत्ता के कोकून समय पर उपलब्ध करवाये जायेंगे।

कुल कोकून उत्पादन

ईरी कोकून 281 किग्रा
मूँगा कोकून 1180 नग

कोकून उत्पादन से कुल आय रू0 18,230

हमें उम्मीद है कि एक बार कुछ किसानों के लिये इस कार्यक्रम को पूर्ण आय उपार्जक कार्यक्रम के रूप में प्रदर्शित करने के बाद हम इस कार्यक्रम के विस्तार में सफल होंगे तथा हस्तशिल्प कार्यक्रम हेतु संपूर्ण कच्चे माल की आवश्यकता की पूर्ति स्थानीय स्तर पर उत्पादन से कर पायेंगे। इस बीच हस्तशिल्प उद्यम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये बाहर से कोकून एवं तागे की खरीद जारी रखे हुए है। साथ ही हम कोकून उत्पादन को मजबूत आधार प्रदान करने हेतु कीटांडों की गुणवत्ता सुधार तथा नियमित आपूर्ति के लिये रेशम विभाग के साथ निरंतर संपर्क में हैं।

तालिका 16

विवरण	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
कुल किसान – ईरी	50	39	96	46
कुल किसान – मूँगा	63	40	60	12
स्थापित नर्सरी		14	8	9
कुल पौधारोपण क्षेत्र	75.6 एकड़	59.5 एकड़	65.84 एकड़	25.84एकड़
कुल आय	Rs 3,670	Rs 5,544	7,395	18,230

8. स्वास्थ्य सुरक्षा

8.1 स्वास्थ्य बीमा :–

कारीगरों के स्वास्थ्य बीमा हेतु हम विकास आयुक्त हस्तशिल्प कार्यालय के साथ कार्य जारी रखे हुए हैं। इस वर्ष राजीव गॉधी शिल्पी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत 51 कारीगरों का स्वास्थ्य बीमा कराया गया। वर्तमान में ये कारीगर कैशलैस कार्ड की सहायता से मान्यताप्राप्त अस्पतालों से ईलाज कराने में सक्षम हैं।

अवनी स्टाफ के लिये विद्यमान जीवन बीमा के अलावा व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा की भी सुरक्षा प्रदान की गई है।

8.2 स्वास्थ्य शिविर

स्वास्थ्या सुरक्षा की दिशा में अपनी छोटी सी पहल को जारी रखते हुए हमने संस्था में आने वाले डॉक्टरों के साथ चर्चाऐं आयोजित की हैं तथा रोगियों को आरोही एवं श्रीवास्तव क्लिनिक रानीखेत में सब्सिडाईज्ड एवं भरोसेमंद स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ प्रदान करवाया है। डा0 श्रीनिवासन द्वारा इस क्षेत्र के जरूरतमंद लोगों को स्वास्थ्य देखभाल हेतु सलाह एवं सहयोग दिया जा रहा है। इस वर्ष डा0 श्रीनिवासन द्वारा ग्राम दिगोली में दाईयों को सघन प्रशिक्षण भी दिया गया।

बर्थिंग सेंटर आरंभ करने के विचार को परिवर्तित करके प्रसवपूर्व एवं प्रसव बाद की देखरेख हेतु दाईयों को प्रशिक्षण देने की कार्ययोजना पर कार्य किया जा रहा है। इसके साथ परंपरागत

खानपान की विधियों के माध्यम से सुरक्षात्मक स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जा रहा है। यह परिवर्तन अवनी की टीम में डॉ न होने की बात को ध्यान में रखकर किया गया है। इस संदर्भ में वित्तीय सहयोग हेतु वोल्कार्ट फाऊॅडेशन स्विटजरलैंड को प्रस्ताव भेजा गया है जोकि सैद्धांतिक रूप से स्वीकृत हो गया है। इस हेतु औपचारिक स्वीकृति आनी बाकी है।

8.3 दाई प्रशिक्षण

ग्राम दिगोली की 15 दाईयों हेतु प्रशिक्षण का आयोजन ग्राम दिगोली में किया गया। इसके अलावा अवनी स्टाफ सदस्यों एवं गॉव की दाईयों समेत 7 लोगों द्वारा प्राकृतिक प्रसव केन्द्र गोवा में आयोजित प्रशिक्षण में सहभागिता की गई। इस प्रशिक्षण में निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया।

- प्रसव के दौरान पोषण एवं स्वच्छता
- ऐंटिनेंटल कार्ड का विकास एवं सूचना एकत्रीकरण हेतु प्रशिक्षण
- गर्भवती महिलाओं हेतु व्यायाम
- रक्त की कमी एवं यूरीन जॉच की आसान विधियां
- गर्भावस्था हेतु उपयुक्त एवं सुरक्षित उम्र, वजन एवं लंबाई
- खतरे के संकेतों की ग्रेडिंग
- प्लेसेंटा निर्गमन को सुनिश्चित करना।

तालिका 17

क्रम सं0	अवधि	स्थान	डॉक्टर	प्रततिभागी
1	15–17 नवंबर, 09	ग्राम दिगोली	डॉ0 एस श्रीनिवासन, इंद्रप्रस्थ अपोलो क्लिनिक, नई दिल्ली	15
2	14 से 16 अगस्त 09	प्राकृतिक प्रसव केन्द्र गोवा	सुश्री कोरियाना स्टाहोफेन, प्राकृतिक प्रसव केन्द्र, 161, बैरौ आल्टो, गोवा	7

8.4 बेसलाईन सर्वे

ग्राम दिगोली में जन्म डाटा, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर एवं गर्भवती महिलाओं का डाटा एकत्रित किया गया। इस तरह का सर्वे ग्राम सुकना एवं चनकाना में प्रस्तावित है।

8.5 प्रदर्शन भ्रमण

ग्रामीण दाईयों एवं अवनी टीम के सदस्यों हेतु प्रदर्शन भ्रमण का आयोजन ट्राईबल हैल्थ इनिसिएटिव सितलिंगी धरमपूरी, तमिलनाडु एवं प्राकृतिक प्रसव केन्द्र, आसागॉव गोवा हेतु किया गया। अवनी टीम के 5 कार्यकताओं एवं 2 ग्रामीण दाईयों द्वारा इस प्रदर्शन भ्रमण में सहभागिता की

गई। इस भ्रमण के दौरान प्राकृतिक प्रसव केन्द्र, आसागॉव, गोवा में आयोजित प्रशिक्षण में भी सहभागिता की गई।

9. कार्यशाला एवं बैठकें :–

हम अवनी के कार्यों का प्रस्तुतीकरण विभिन्न क्षेत्रों में करने एवं अधिकाधिक लोगों तक पहुॅचाने में सफल रहे हैं। इस प्रक्रिया से संस्था के लिये सकारात्मक सहयोग का सृजन हुआ है। विगत वर्ष के दौरान हमने निम्नलिखित स्थानों पर अपने कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया है।

दिनांक	स्थान	आयोजक
मार्च 2010	जिनेवा	संयुक्त राष्ट्र महिला गिल्ड, जेनेवा
फरवरी 2010	गोवा	आर्गेनिक फार्मरर्स एसोशिऐसन ऑफ इंडिया
जुलाई 2009	आई डी डी एस कार्यशाला कुनुस्ट कुमासी, घाना	आई डी डी एस, एमआईटी बोस्टन
अगस्त 2009	सेवा मंदिर, उदयपुर	अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण नेटवर्क, उदयपुर

10. विद्यार्थी एवं स्वयंसेवक :–

विवरण	भारतीय	विदेशी	कुल
विजिटर	38	40	78
स्वयंसेवक	4	25	29
स्कूल/कालेज के विद्यार्थी	52	2	54
सरकारी अधिकारी	6	0	6
डिप्लोमा विद्यार्थी	2	0	2
कुल	**102**	**67**	**169**

12. अन्य संस्थानों से सहयोग :–

हुनरशाला, गुजरात
राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान, अहमदाबाद
आरोही, नैनीताल
अंकुर साइंटफिक, बड़ौदा
विवेकानंद कृषि अनुसंधान संस्थान, हवालबाग
पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर
क्राफ्ट कौंसिल ऑफ इंडिया, दिल्ली
पीपल ट्री, दिल्ली
दि वीवर्स व्हील नेटवर्क, गोवा
बेयरफुट, गोवा

आइका, नई दिल्ली
सिल्क मार्क आर्गनाईजेशन, बम्बई
दस्तकार, दिल्ली
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बैंग्लौर
रेशम विभाग हल्द्वानी एवं देहरादून
फ्रेंडस ऑफ तिलोनियां, संयुक्त राज्य अमेरिका
ली पैसर, डैकोरेशन, फ्रांस
टवेंट विश्वविद्यालय, नीदरलैंड
आई डी डी एस, डी–लैब एवं ग्लोबल विलेज मासाचुसैटस इंसटयूट ऑफ टैक्नॉलॉजी, संयुक्त राज्य अमेरिका
राष्ट्रीय फैशन टैक्नलॉजी, गॉधीनगर
प्राकृतिक प्रसव केन्द्र, गोवा
एग्री टयूरिस्मो कैस्कना डेई फूटासेश, इटली
मध्यप्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम, भोपाल
स्कूल फार इंटरनेशनल ट्रेनिंग, स्टडी एब्रोड, जयपुर

13. हमारे संस्थागत वित्तीय सहयोगी :–

1. वोल्कार्ट फाऊॅडेशन, भारत
2. फोर्ड फाऊॅडेशन, नई दिल्ली

14. व्यक्तिगत दानदाता 2008–09

नाम	अंशदान
सुश्री मोईना रे, देहरादून	1,055
श्री किशोर वोरा, पूना	5,000
श्री मनीष चलाना	2,000
डा0 ऊषा मलखानी, पूना	20,000
सुश्री पामेला टोपले	1,500
श्री आर. एस. पिल्ले, पूना	10,000
ईला ईमानी,	3,000
चिन्मया डनस्टर, गोवा	5,000
श्री शौनक शाह, मुंबई	3,750
श्री धीरज वशिष्ठ, मुंबई	3,750
श्री जौंस ग्रांट, लंदन	1,38,990
सुश्री बसंती गोपाल राव खाती,पूना	3,000
सुश्री निकोला हरिसन, ब्रिटेन	2,17,852
श्री जैकब जुकी, कनाडा	45,614
श्री संदीप, आर्टईंडस इंडिया	11,000
संस्कृति, पूना	41,000

श्री अमर सेठ, दिल्ली	2,500
कुल	5,15,011

15. व्यक्तिगत सहयोग हेतु आभार

श्री अमर सेठ, दिल्ली
डॉ एस श्रीनिवासन, दिल्ली
सुश्री कैथरीन कौनफिनो, फ्रांस
श्री मिशेल कूबा, फ्रांस
सुश्री अलैजैंड्रा एल एबाटे, इटली
श्री ब्रूनो एवं सुश्री मिलेना जारो, इटली
श्री मैथ्यू कूबा, फ्रांस
सुश्री एलीट कूस्टन, फ्रांस
सुश्री किटो थोमासैरी, फ्रांस
श्री प्रदीप, केरला
श्री अरून एवं सुश्री सोफिया, गोवा
श्री चिन्मया एवं सुश्री नवीना, गोवा
सुश्री कोरियाना, गोवा
सुश्री ऐली एवं श्री रिक ब्रेडली
श्री प्रदीप कनियाडी

15. अवनी मुख्य कार्यकारिणी सदस्यों की सूची

नाम	पता	पदनाम
सुश्री पामेला चटर्जी	ग्राम बगरीजूना, कौसानी, जिला बागेश्वर, उत्तरांचल	अध्यक्ष
श्री रजनीश जैन	पो0 त्रिपुरादेवी, वाया बेरीनाग, जिला पिथौरागढ़, उत्तरांचल 262531	सचिव
श्री योगेश्वर कुमार	53 – राजौरी अपार्टमेंटस, सरकारी प्रेस के सामने, मायापुरी, नई दिल्ली 110064	कोषाध्यक्ष
श्री केशव देसीराजू	ए 5, टिहरी हाऊस आफिसर्स कालोनी, राजपुर रोड, देहरादून– 248009	सदस्य
डा0 स्मिता वोरा	ए 3, राहुल टैरेस, मीरा नगर, कोरेगॉव पार्क, पूना– 411001	सदस्य
डा0 सुशील शर्मा	ग्राम सतोली, पो0 प्यूड़ा, वाया मुक्तेश्वर, जिला नैनीताल, उत्तरांचल 263138	सदस्य
श्री गिरिराज सिन्ह	पो0 गोधरा पश्चिम, तालुका संतरामपुर, जिला पंचमहल, गुजरात 289230	सदस्य

16. अवनी सामान्य कार्यकारिणी सदस्यों की सूची

नाम	पता
श्री जशौद सिंह	ग्राम – भयूँ,जिला पिथौरागढ़
श्री बलराम सिंह	ग्राम – भयूँ,जिला पिथौरागढ़
श्री फकीर राम	ग्राम – चन्तोला, जिला बागेश्वर
श्री राजेन्द्र जोशी	ग्राम – देवल बिछराल, जिला बागेश्वर
सुश्री हेमा आगरी	ग्राम – बेलड़ाआगर, जिला पिथौरागढ़
श्री जगदीश धपोला	ग्राम – सिलिंग्या, जिला बागेश्वर
सुश्री कमला राठौर	ग्राम – सिमगढ़ी, जिला बागेश्वर
सुश्री रधुली बोरा	ग्राम – दिगोली, जिला बागेश्वर
श्री गोविंद सिंह बोरा	ग्राम – गोल्ती, जिला पिथौरागढ़
श्री आनंद बल्लभ पंत	ग्राम – बना, जिला पिथौरागढ़
सुश्री कमला भैंसोड़ा	ग्राम – रावलगॉव, जिला पिथौरागढ़
सुश्री ललिता पंचपाल	ग्राम – सौक्यूड़ा, जिला बागेश्वर
सुश्री कमला बोरा	ग्राम – चनकाना, जिला पिथौरागढ़
श्री कुमुद पंत	ग्राम – बना, जिला पिथौरागढ़
श्री महेश राम	ग्राम – चन्तोला, जिला बागेश्वर
श्री वर्मा राम	ग्राम – गोल्ती, जिला पिथौरागढ़
श्री दीप पंत	ग्राम – बना, जिला पिथौरागढ़
सुश्री रेवती बोरा	ग्राम – दिगोली, जिला बागेश्वर
श्री हीरा सिंह धर्मशक्तू	ग्राम – धरमघर, जिला बागेश्वर
श्री पान सिंह मेहरा	ग्राम – महरूड़ी, जिला बागेश्वर
सुश्री शांति बोरा	ग्राम – दिगोली, जिला बागेश्वर
सुश्री रश्मि भारती	अवनी, त्रिपुरादेवी, जिला पिथौरागढ़

16. केस स्टडी :–

इन सफल कहानियों को प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य इस बात को दर्शाना है कि जब उपयुक्त अवसर व जगह उपलब्ध हों तो लोगों की छुपी हुई संभावनाऐं विकसित एवं सशक्त हो सकती हैं। हमारे कार्य में देखने को मिला है कि जिन लोगों को किसी कारणवश पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला उन्होंने मौका मिलने पर अपने जीवन को सॅवारा है। सदूरवर्ती गॉवों के गरीब लोगों को अपनी प्रतिभा को निखारकर अपने पॉवों पर खड़ा करना, हमारे लिये एक सुखद अनुभव रहा है।

इस संदर्भ मे हम यहॉ पर कुछ केस स्टडी का उल्लेख कर रहे हैं हालॉकि इस तरह की अनेक अन्य कहानियॉ भी उल्लेखनीय हैं।

केस स्टडी 1
रेखा आर्या

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
रेखा आर्या 22 वर्ष	8 वीं कक्षा उत्तीर्ण	2002	फिनिशिंग प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की शाल बुनाई की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनी। सबसे अच्छी बुनकरों में शामिल। निटिंग एवं एम्ब्रोईडरी अल्मोड़ा पॅटर्न की शाल का ताना लगाने, भराई करने एवं बुनाई करने में सक्षम

रेखा आर्या जिला पिथौरागढ़ के गॉव मुॅगराऊॅ की निवासी हैं। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह केवल 8 वीं कक्षा तक ही स्कूल की पढ़ाई कर पाई। रेखा के पिता दैनिक मजदूरी का कार्य करते हैं जिससे उन्हें अनियमित आय प्राप्त होती है।

परिवार की वित्तीय अस्थिरता को देखते हुए रेखा ने सोचा कि इस स्थिति से उबरने के लिये सबसे अच्छा रास्ता यही है कि अपनी आजीविका खुद ही कमाई जाए ताकि वित्तीय आत्मनिर्भरता के साथ साथ परिवार की आर्थिक मदद भी हो सके।

रेखा ने अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी में फिनिशिंग एवं निटिंग प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य करना आरंभ किया। वर्ष 2004 में जब अवनी केन्द्र में कलैंडरिंग मशीन की स्थापना की गई तो रेखा ने कलैंडरिंग का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। निटिंग एवं कलैंडरिंग के माध्यम से वह आय उपार्जित करने लगी। वर्ष 2005–06 में रेखा ने दिल्ली जाकर निटिंग हेतु आगे का प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिल्ली से वापसी के बाद उसने कुछ अन्य प्रशिक्षणार्थियों को निटिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया। धारे धीरे धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया तथा उसने अपने कार्य विस्तार हेतु अपनी रूचि प्रदर्शित की। निटिंग एवं एम्ब्रोईडरी के कौशल को दूसरे कारीगरों को सिखाने के बाद रेखा ने बुनाई कार्य सीखना आरंभ किया।

रेखा का आत्मविश्वास निरंतर बढ़ता गया। वर्तमान में रेखा कुशल बुनकर के रूप में विगत 4 वर्ष से कार्यरत है तथा मासिक रूप से लगभग रू0 2000 की आय अर्जित कर रही है। रेखा न केवल अपनी आजीविका कमा रही है बल्कि अपने परिवार की भी अधिकांश जिम्मेदारियों का वहन कर रही है। उसने अपने परिवार की मदद निम्नलिखित प्रकार की है।

- अपने भाई की शादी हेतु उसने रू0 10,000 की वित्तीय मदद प्रदान की।
- अपने घर के लिये उसने म्यूजिक प्लेयर खरीदा
- घर के लिये रसोई गैस का कनक्शन अपनी कमाई से खरीदा।

इसके अलावा वह रू0 1,000 मासिक रूप से अपनी मॉ को घर का खर्च चलाने हेतु देती हैं। इसके अलावा उसने इंश्योरेंस स्कीम के तहत आर डी खाता भी खोला है जिसमें वह रू0 500 मासिक रूप से जमा करती हैं।

केस स्टडी 2
रेशमी बोरा

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
रेशमी	8 वीं	2006	कताई	रेशम एवं	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं

बोरा 21 वर्ष	कक्षा		प्रशिक्षणार्थी	ऊन की शाल बुनाई की कुशल बुनकर एवं कताई प्रशिक्षक	कुशल बुनकर बनी। सबसे अच्छी बुनकरें में शामिल। ताना लगाने, भराई करने एवं बुनाई करने में सक्षम रेशम कताई प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने में सक्षम

रेशमी बोरा जनपद बागेश्वर के ग्राम तलाड़ा की मूल निवासी हैं। रेशमी जब मात्र 2 वर्ष की थी तो उसके पिता का देहांत हो गया। रेशमी का पालन पोषण उसकी माता द्वारा किया गया। गॉव में आय का नियमित स्रोत नहीं होने के रेशमी की माता को जीवन यापन में कठिनाई महसूस होने लगी। रेशमी की माता 5 वर्ष की रेशमी को लेकर अपने पिता के घर में स्थानांतरित हो गई। इसके बाद काफी समय तक रेशमी के नाना जोकि एक अकुशल मजदूर हैं के द्वारा उनका पालन पोषण एवं वित्तीय मदद की गई।

धीरे – धीरे रेशमी बड़ी होने लगी तो खर्चे बढ़ने लगे और वह कक्षा 8 वीं से आगे पढ़ाई जारी नहीं रख पाई।

परिवार की वित्तीय अस्थिरता को देखते हुए रेखा ने सोचा कि इस स्थिति से उबरने के लिये सबसे अच्छा रास्ता यही है कि अपनी आजीविका खुद ही कमाई जाये ताकि वित्तीय आत्मनिर्भरता के साथ–साथ परिवार की आर्थिक मदद भी हो सके।

अवनी द्वारा जब ग्राम गढ़तिर में रेशम कताई प्रशिक्षण आरंभ किया गया तो रेशमी 3 माह के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थी के रूप में शामिल हो गई। कताई में उसका हाथ काफी साफ था तथा कुछ ही महिनों में वह एक मेहनती एवं अच्छी कतकर के रूप में उभरकर आई। प्रशिक्षण के दौरान रेशमी ने न केवल कताई करना सीखा बल्कि यह भी सीखा कि किस प्रकार अन्य लोगों को कताई सिखाई जाऐ। कुछ ही समय बाद वह न केवल कुशल कतकर बनी बल्कि कुशल प्रशिक्षक

के गुण भी स्वयं में विकसित कर लिये। रेशमी द्वारा राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान के बिद्यार्थियों के साथ भी कार्य किया गया तथा अन्य कारीगरों को डिजाईनर तागे की कताई हेतु भी प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2008 में रेशमी ने ग्राम चनकाना केन्द्र में बुनाई प्रशिक्षक के रूप में कार्य करना आरंभ किया। वर्तमान में वह कुशल बुनकर के रूप में कार्यरत हैं तथा मासिक रूप से रू0 1500 की आय अर्जित कर रही हैं।

रेशमी अपनी कमाई से अपने परिवार को आर्थिक स्थायित्व देने में सफल हुई हैं। अपनी कमाई में से वह रू0 1200 मासिक रूप से अपनी माता को घर का खर्च चलाने हेतु देती हैं तथा रू0 100 मासिक रूप से बैंक के बचत खाते में जमा करती हैं। रेशमी गर्व के साथ बताती हैं कि उन्होंने अपनी कमाई से कुछ दिन पूर्व अपने लिये मोबाईल फोन भी खरीदा है।

वर्तमान में रेशमी कुशल बुनकर, कतकर एवं कताई प्रशिक्षक के रूप में कार्य कर रही हैं। उनका चुनाव गॉवों में स्थापित किये जा रहे सौर ऊर्जा चालित चर्खे पर कताई प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षक के रूप में किया गया है।

केस स्टडी 3
कमला बोरा

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
क्मला बोरा 22 वर्ष	8वीं कक्षा	2002	बुनाई प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन के शाल की बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी तथा कुशल बुनकर बनी। अल्मोड़ा पैटर्न की शाल की वार्पिंग, ड्राफ्टिंग एवं बुनाई में सक्षम

कमला बोरा ग्राम दिगोली, जिला बागेश्वर के एक गरीब परिवार से संबधित है। दिगोली गॉव नजदीकी सड़क मार्ग से 3 घंटे की पैदल दूरी पर स्थित है। कमला का परिवार परंपरागत रूप से ऊन की कताई बुनाई का कार्य करता है। अपने 4 भाई बहनों में कमला सबसे छोटी हैं। कमला का एक बड़ा भाई रोजगार की तलाश में शहर गया लेकिन उसके बाद वह लौट कर नहीं आया। कमला को नहीं मालूम कि वह कहॉ एवं किस हाल में है। कमला के पिता अकुशल मजदूर के रूप में कार्य करते थे जो अब बुढ़ापे के कारण नहीं कर पाते। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण कमला कक्षा 8 वीं से आगे पढ़ाई जारी नहीं रख पाई।

कमला की प्रबल इच्छा थी कि वह वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार का सहयोग करे। उसके द्वारा 8 वर्ष पूर्व प्रशिक्षणार्थी के रूप

में तब कार्य करना आरंभ किया जब अवनी कार्यकर्ता एवं फील्ड सेंटर इंचार्ज श्री हरीश पंत द्वारा उसके माता पिता को यह सुझाव दिया गया कि कमला को इस कार्य में जुड़ने हेतु भेजना चाहिए। कमला ने प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य आरंभ किया तथा कुछ ही महिनों में वह एक मेहनती एवं कुशल बुनकर के रूप में स्वयं को स्थापित करने में सफल रही। कमला ने स्वयं को अल्मोड़ा पैटर्न की शाल की वार्पिंग एवं ड्राफ्टिंग हेतु भी प्रशिक्षित किया।

कमला विगत 8 वर्षों से कुशल बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं तथा मासिक रूप से रू0 2000 की आय अर्जित कर रही हैं। वह न केवल अपने लिये आय अर्जित कर रही हैं बल्कि अपने परिवार की अधिकांश जिम्मेदारियों का वहन कर रही हैं। कमला ने अनेक प्रकार से अपने परिवार की मदद की है।

- अपनी आय से घर में सौर उपकरण की स्थापना।
- मासिक रूप से रू0 1500 की धनराशि अपनी माता को घर का खर्च चलाने हेतु देती हैं।
- अपने लिये रू0 8500 मू0 के स्वर्ण आभूषण निर्मित किये।

इसके अलावा वह रू0 125 की धनराशि मासिक रूप से स्वयं सहायता समूह के मासिक बचत खाते में जमा करती हैं। इस प्रकार कमला ने छोटी सी धनराशि बचत खाते में भी जमा की है।

केस स्टडी 4
सुनीता बोरा

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
सुनीता बोरा 22 वर्ष	8 वीं कक्षा	2007	फिनिशिंग प्रशिक्षणार्थी	कुशल फिनिशिंग कारीगर एवं बुनकर	फिनिशिंग कार्य सीखा तथा सबसे अच्छी फिनिशिंग कारीगर. रेशम बुनाई में सक्षम फिनिशंग प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने हेतु सक्षम

सुनीता बोरा ग्राम दिगोली, जिला बागेश्वर के एक गरीब परिवार से संबधित है। सुनीता के पिता दैनिक मजूदर के रूप में कार्य करते हैं। इस कार्य से उनहें अनियमित आय प्राप्त होती है। सुनीता के परिवार में माता पिता के अलावा 5 बहनें एवं एक छोटा भाई है। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण सुनीता कक्षा 8 वीं से आगे की पढ़ाई नहीं कर पाई।

उसका परिवार ऊन की कताई कार्य भी करता है। लेकिन इससे भी परिवार के भरण पोषण हेतु पर्याप्त आय प्राप्त नहीं हो पाती थी। सुनीता की प्रबल इच्छा थी कि वह वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार का सहयोग करे। उसके द्वारा 3 वर्ष पूर्व प्रशिक्षणार्थी के रूप में तब कार्य करना आरंभ किया जब अवनी कार्यकर्ता एवं फील्ड सेंटर इंचार्ज श्री हरीश पंत द्वारा

उसके माता पिता को यह सुझाव दिया गया कि कमला को इस कार्य में जुड़ने हेतु भेजना चाहिए। सुनीता द्वारा अपना कार्य फिनिशिंग कारीगर के रूप में आरंभ किया गया। कुछ ही महिनों में वह सेंटर की सबसे मेहनती एवं कुशल फिनिशिंग कारीगर के रूप मं स्वयं को स्थापित करने में सफल रही। सुनीता की रूचि फिनिशिंग के अलावा अन्य कार्य सीखने में भी थी। उसने स्वयं को रेशम एवं ऊन की बुनाई हेतु भी प्रशिक्षित किया। वर्ष 2009–10 में सुनीता ने स्वयं को सबसे अच्छे फिनिशिंग कारीगर के रूप में स्थापित करते हुए निर्धारित लक्ष्य से अधिक कार्य किया तथा रू0 9,000 की धनराशि बौनस के रूप में प्राप्त की। वर्तमान में वह अन्य कारीगरों के लिये प्रशिक्षक का कार्य भी कर रही हैं।

सुनीता विगत 3 सालों से कुशल फिनिशिंग कारीगर एवं बुनकर के रूप में कार्य कर रही है तथा रू0 1800 मासिक रूप से अर्जित कर रही हैं। वह न केवल अपने लिये आय उपार्जित कर रही हैं बल्कि अपने परिवार की भी आर्थिक मदद कर रही हैं।

इसके अलावा वह रू0 125 की धनराशि मासिक रूप से स्वयं सहायता समूह के मासिक बचत खाते में जमा करती हैं। इस प्रकार सुनीता ने छोटी सी धनराशि बचत खाते में भी जमा की है।

अवनी के वित्तीय परिणाम का सारांशः–

वर्ष 2009–10 के वित्तीय परिणाम का सारांश निम्नलिखित प्रकार है–

वित्तीय परिणामों का सारांश

आय एवं ब्यय

आय

बिक्री	39,66,339.00
अन्य आय	9,44,818
अनुदान (भारतीय)	12,53,780
क्लोजिंग स्टॉक	13,62,167
एफ0सी0आर0ए0 अनुदान	59,43,358
कुल	1,34,70,463
ब्यय	
आरम्भिक स्टॉक	45,98,757
अनुदान एंव अन्य ब्यय	20,13,563
एफ0सी0आर0ए0 ब्यय	43,36,689
अप्रयुक्त अनुदान	
लोकल	9,82,650
एफ0सी0आर0ए0	16,07,023
वर्ष की आय	68,219
कुल	1,34,70,463
बैलेन्सशीट	
आय के स्रोत	
पूंजीगत कोश	93,60,447
अचल सम्पत्ति हेतु अप्रयुक्त अनुदान	1,39,53,301
अप्रयुक्त अनुदान	27,62,287
वर्तमान देनदारियां	13,21,473
कुल	2,73,97,509
आय के प्रकार	
अचल सम्पत्ति	1,57,31,745
कैश/बैंक	17,19,039
प्राप्ति योग्य अनुदान	4,22,043
अन्तिम स्टॉक	13,62,167
अन्य अचल सम्पत्ति	81,62,514
कुल	2,73,97,509

महिला समूह विवरण 2010 –11

क्रम सं0	समूह का नाम	सदस्य सं.	आयोजित बैठक	अपस्थित सदस्य	31 मार्च 2010 तक जमा	वर्ष 2010–11 में जमा	वर्ष 2010–11 में सदस्यों को वापस	कुल जमा	विगत वर्ष दिया गया ऋण	वर्ष 10–11 में दिया गया ऋण	वापस ऋण
1	लमजिंगड़ा	16			48,011				2,500		
2	चन्तोला	10			19,275				0		
3	सिमायल	16			20,437				0		
4	माणा	12			44,474				10,000		
5	धौलानी	17			26,002				15,000		
6	महरौड़ी	14			23,155				8,000		
7	सिमगढ़ी	11			18,154				2,000		
8	त्रिपुरादेवी	13			33,412				12,000		
9	दिगोली	17			26,372				25,000		
10	मटकोली	9			8,433				0		
11	धरमघर	6			7,187				0		
12	बेरीनाग	23			58,143				0		
13	चनकाना	9			13,610				0		
14	ठॉगा	11			32,984				24,000		
15	सुकना	10			27,992				0		
16	सिलिंगियॉ	15			13,900				0		
17	गढ़तिर	9			3,140				0		

18	मूँगराऊँ	22			16,734				13,000		
19	हस्यूड़ी	8			6,953				0		
20	रावलगॉव	16			15,808				0		
21	बना बैंड	17			0				0		
22	सेरा पहर	9			7,178				6,000		
23	बना	12			10,730				0		
24	सेला	14			13,076				0		
25	कन्यूरपानी	10			8,732				0		
26	ज्यूला	15			12,795				0		
27	बानड़ी	8			5,418				0		
28	औलानी	12			15,015				10,000		
29	पिपली	15			9,770				0		
30	ज्योति समूह बल्टा	11			2,663				0		
31	प्रगतिशील समूह बल्टा	11			1,624				0		
32	चाख	14			8,945				4,000		
33	बास्ती	9			12,773				0		
34	दुदिला	23			14,664				0		
35	ओखराड़ी	12			6,086				0		
36	एराड़ी	17			6,148				0		
37	जखेड़ी	12			6,432				0		
38	दिगोली	20			51,464				22,000		
39	चेतना त्रिपुरादेवी	23			25,390				22,000		
	कुल	**528**			**683,079**				**175,500**		